एशिया का उल्लेखनीय आर्थिक परिवर्तन

लेखक - दीपक नैय्यर (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

द हिन्दू

22 अक्टूबर, 2019

"सरकारों ने एशिया के विकास की आधी सदी में नेता से लेकर उत्प्रेरक या समर्थक तक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।"

दो सदी पहले, 1820 में, एशिया में दुनिया की आबादी का दो-तिहाई और विश्व की आय का आधा से अधिक हिस्सा था। इसने विश्व अर्थव्यवस्था में विनिर्माण उत्पादन के आधे से अधिक में अपना योगदान दिया। एशिया में बाद की गिरावट वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ इसके एकीकरण के कारण थी, जिसे उपनिवेशवाद द्वारा आकार दिया गया और साम्राज्यवाद द्वारा संचालित किया गया। 1962 तक विश्व आय में इसकी हिस्सेदारी 15% तक गिर गई थी जबकि विश्व विनिर्माण में इसकी हिस्सेदारी 6% तक गिर गई थी। 1970 में भी एशिया सबसे गरीब महाद्वीप था। इसके जनसांख्यिकीय और विकास के सामाजिक संकेतक सबसे खराब थे। गुनार मिर्डल, जिन्होंने 1968 में अपनी प्रसिद्ध रचना 'एशियन ड्रामा' को प्रकाशित किया था, इस महाद्वीप के विकास की संभावनाओं के बारे में काफी निराशावादी थे।

प्रमुख कारक

तब से आधी सदी में, एशिया ने राष्ट्रों की आर्थिक प्रगति और लोगों के रहने की स्थिति के मामले में कई परिवर्तन को देखा है। 2016 तक यह विश्व की आय का 30%, विश्व निर्माण का 40% और विश्व व्यापार का एक तिहाई से अधिक बन गया था। इसकी प्रति व्यक्ति आय भी विश्व औसत के बराबर होने लगी। हालाँकि औद्योगिक देशों की तुलना में यह औसत सबसे अच्छा था क्योंकि आरंभिक आय का अंतर बहुत अधिक था। यह परिवर्तन पूरे देशों में और लोगों के बीच असमान था। वास्तव में, इस थोड़े समय के अंतराल में एशिया का आर्थिक परिवर्तन इतिहास में लगभग अभूतपूर्व रहा है।

एशिया की विविधता को पहचानना आवश्यक है। भौगोलिक आकार, इससे जुड़ा इतिहास, औपनिवेशिक विरासत, राष्ट्रवादी आंदोलनों, प्रारंभिक स्थितियों, प्राकृतिक संसाधन बंदोबस्त, जनसंख्या आकार, आय स्तर और राजनीतिक प्रणालियों में देशों के बीच अंतर थे। बाज़ारों पर निर्भरता और खुली अर्थव्यवस्था देशों और समय के साथ भिन्न-भिन्न होती है। राजनीति भी सत्तावादी शासन या कुलीन वर्गों से लेकर राजनीतिक लोकतंत्रों तक व्यापक रूप से फैली हुई थी। इसलिए विचारधाराएँ भी साम्यवाद से लेकर राज्यवाद और पूँजीवाद तक सीमित थीं। विकास के परिणाम स्थान और समय के साथ भिन्न-भिन्न होते गए। विकास के अलग-अलग रास्ते थे क्योंकि कोई सार्वभौमिक समाधान नहीं था।

एशियाई देशों के लिए, राजनीतिक स्वतंत्रता, जिसने उनकी आर्थिक स्वायत्तता को बहाल किया और उन्हें अपने राष्ट्रीय विकास के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में सक्षम किया, इस परिवर्तन को प्रेरित और आगे बढ़ाने में सहयोग किया। साथ ही, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के विपरीत, अधिकांश एशियाई देशों में अच्छी तरह से संरचित राज्यों और संस्कृतियों का एक लंबा इतिहास था जो उपनिवेशवाद से पूरी तरह से नष्ट नहीं हुए थे।

आर्थिक वृद्धि ने विकास को गति दी। एशिया में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद और जीडीपी की वृद्धि दर तेज़ी से बढ़ी और यह दुनिया में अन्य जगहों की तुलना में कहीं अधिक थी। शिक्षा के प्रसार के साथ संयुक्त निवेश और बचत दर अंतर्निहित कारक थे। विकास तेज़ी से औद्योगिकरण द्वारा संचालित था जो अक्सर निर्यात के नेतृत्व में था। संचयी कार्य का एक अच्छा चक्र था जहाँ तेजी से निर्यात वृद्धि के साथ तेजी से निवेश की वृद्धि हुई जिससे तेज़ी से जीडीपी का विकास हुआ। यह आउटपुट और रोज़गार की संरचना में संरचनात्मक परिवर्तनों से जुड़ा था। इस प्रक्रिया को समय के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्रों में आर्थिक नीतियों के समन्वय से भी समर्थन मिला।

असमान परिणाम

हालाँकि, उप-क्षेत्रों और देशों में विकास के परिणाम असमान थे। पूर्वी एशिया सबसे आगे था और दक्षिण एशिया मध्य पूर्व में दक्षिण पूर्व एशिया के साथ पिछड़ रहा था, साथ ही पश्चिम एशिया में प्रगति इसके उच्च-आय स्तरों से मेल नहीं खाती थी। केवल 50 वर्षों में दक्षिण कोरिया, ताइवान और सिंगापुर औद्योगिक देशों की श्रेणी में शामिल हो गए। 1990 के बाद विकास में प्रभावशाली प्रगति करते हुए चीन सबसे प्रमुख बन गया था।

इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड की आर्थिक गतिशीलता एशियाई वित्तीय संकट के बाद कम हो गई। पिछली तिमाही के दौरान भारत, बांग्लादेश और वियतनाम का विकास प्रदर्शन सबसे प्रभावशाली था, हालाँकि भारत और बांग्लादेश सामाजिक प्रगति में एशिया के बाकी हिस्सों से मेल नहीं खाते थे। इसकी तुलना में श्रीलंका का प्रदर्शन सम्मानजनक था जबकि तुर्की औसत था; लेकिन पाकिस्तान और फिलीपींस अपेक्षाकृत सबसे गरीब थे।

प्रति व्यक्ति बढ़ती आय ने विकास के सामाजिक संकेतकों को बदल दिया क्योंकि साक्षरता दर और जीवन प्रत्याशा हर जगह बढ़ रही थी। तीव्र आर्थिक विकास के कारण निरपेक्ष गरीबी में भारी कमी आई। लेकिन अभूतपूर्व विकास के बावजूद निरपेक्ष गरीबी का जो पैमाना है, वह उतनी ही तेज़ी से घट रहा है। देशों के भीतर लोगों के बीच असमानता लगभग हर जगह बढ़ी है जबकि एशिया के सबसे अमीर और सबसे गरीब देशों के बीच की खाई भयानक बनी हुई है।

नेता से लेकर उत्प्रेरक या समर्थक के रूप में सरकारों ने एशिया की आधी सदी के आर्थिक परिवर्तन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हालाँकि उनकी इच्छा और ऐसा करने की क्षमता राज्य की प्रकृति पर निर्भर थी जिसे राजनीति द्वारा आकार दिया गया था। एशिया के विकास में सफलता देशों और बाज़ारों के बीच विकसित होते संबंधों से अधिक प्रेरित थी। जिन देशों की सरकारें इस भूमिका को नहीं निभा सकीं, वे विकास में पिछड़ गए।

दक्षिण कोरिया, ताइवान और सिंगापुर में विकासात्मक देशों ने अपने विकास के एजेंडे को लागू करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण पहल करते हुए राष्ट्रीय विकास उद्देश्यों की खोज में समय-समय पर क्षेत्रों मंत नीतियों का समन्वय किया और इसलिए वे इतने कम समय में औद्योगिक राष्ट्र बनने में सक्षम हो सके। चीन ने भी इन विकासात्मक देशों का बहुत अधिक सफलता के साथ अनुकरण किया। इसके अलावा, वियतनाम ने दो दशक बाद उसी रास्ते पर चलना शुरू किया क्योंकि दोनों देशों में मजबूत एक-दलीय कम्युनिस्ट सरकारें हैं जो नीतियों का समन्वय और कार्यान्वयन कर सकती थीं।

इन देशों को एशिया में कहीं और दोहराया जाना संभव नहीं है। लेकिन अन्य देशों ने कुछ संस्थागत व्यवस्थाओं को विकसित करने का प्रबंधन किया। भले ही वे कम प्रभावी थे लेकिन औद्योगिकीकरण और विकास के लिए अनुकूल थे। इनमें से कुछ देशों में राजनीतिक लोकतंत्रों के संस्थागत जाँच और संतुलन ने सरकारों को अधिक विकास-उन्मुख और लोगों के अनुकूल बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

खुलापन, औद्योगीकरण

आर्थिक विकास ने एशियाई विकास में एक महत्त्वपूर्ण सहायक भूमिका निभाई। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में जहाँ भी रहा निष्क्रिय प्रवेश की बजाय रणनीतिक एकीकरण के रूप में रहा। हालाँकि, सफल औद्योगीकरण के लिए खुली अर्थव्यवस्था आवश्यक थी, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। खुली अर्थव्यवस्था ने औद्योगिक नीति के साथ संयुक्त होने पर ही औद्योगिकरण की सुविधा प्रदान की। स्पष्ट रूप से, एशिया में औद्योगिकरण की सफलता समझदार औद्योगिक नीति द्वारा संचालित थी जिसे प्रभावी सरकारों द्वारा लागू किया गया था। हालाँकि, भविष्य में औद्योगिकरण को बनाए रखने हेतु एक बेहतर नींव प्रदान करने के लिए तकनीकी शिक्षा और तकनीकी क्षमताएँ भी आवश्यक हैं।

एशिया के वे देश जिन्होंने अपने अनुक्रम को सुधारते हुए अपने सुधार के एजेंडे को संशोधित, अनुकूलित तथा प्रासंगिक बनाया और साथ ही जिस गति से आर्थिक सुधार को पेश किया, उन्हीं देशों ने सबसे अच्छा किया। वे अपने राष्ट्रीय विकास के उद्देश्यों के लिए धर्म विरुद्ध या अपरंपरागत नीतियों का प्रयोग और नवाचार करने में संकोच नहीं करते थे।

आगे की चुनौतियाँ

एशिया का उदय दुनिया में आर्थिक शक्ति के संतुलन में बदलाव की शुरुआत और पश्चिम के राजनीतिक आधिपत्य में कुछ क्षरण को दर्शाता है। एशिया का भविष्य इस आधार पर टिका है कि एशिया कैसे अवसरों का फायदा उठाता है, उत्पन्न चुनौतियों और दुनिया में मौजूदा कठिन आर्थिक एवं राजनीतिक संयोजन का सामना कैसे करता है।

फिर भी, 2030 तक एशिया में प्रति व्यक्ति आय दुनिया के सापेक्ष 1820 में अपने स्तर पर वापस आ जाएगी। हालाँकि, प्रति व्यक्ति आय के संदर्भ में यह संयुक्त राज्य अमेरिका या यूरोप के जैसे समृद्ध नहीं होगी। इस प्रकार, अमीर देशों की आय के स्तर के बिना एशियाई देश विश्व शक्तियों के रूप में उभरेंगे।

फिर भी, यहाँ यह सुझाव देना प्रासंगिक है कि औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के एक सदी बाद, 2050 में एशिया विश्व आय के आधे से अधिक हिस्से को संबोधित करेगा और पृथ्वी पर आधे से अधिक लोगों का घर होगा। इस प्रकार दुनिया में इसका आर्थिक और राजनीतिक महत्व होगा, भले ही यह 1820 में वास्तविकता रही हो, लेकिन इसकी कल्पना 50 साल पहले करना मुश्किल था।

GS World Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. एशियाई महाद्वीप की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

   1. एशिया में तीव्र आर्थिक विकास के कारण निरपेक्ष गरीबी में भारी कमी आई है।
   2. इसमें निरपेक्ष गरीबी का पैमाना फिर भी तेजी से बढ़ रहा है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2
   (d) इनमें से कोई नहीं

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements in the context to economic situation of the Asian continent.**

   1. Rapid economic growth in the Asia has led to a huge reduction in absolute poverty
   2. In this, the scale of absolute poverty is still increasing rapidly.

   Which of the above statement is/are incorrect?

   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) 1 and 2
   (d) None of the these

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 'एशियाई अर्थव्यवस्था की तीव्र वृद्धि कई कारकों पर निर्भर रही है, किन्तु इसमें क्षेत्रीय असमानता भी इन्हीं कारकों की वजह से व्याप्त है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने मत के पक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।
(250 शब्द)

'The rapid growth of the Asian economy has been dependent on many factors, but regional inequality is persisting also due to these factors.' Do you agree with this statement? Also present an argument in favor of your opinion.
(250 words)

नोट : 21 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (a) होगा।